(कवित्त)

भए अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी.
याही दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।
तुम तौ निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमैं सूल सेलनि सो क्योंहूं न भुलाय है।
मीठे मीठे बोल बोलि ठगी पहिलें तौ तब,
अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है।
सुनो है कै नाहीं, यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपायहै सु कैसें कल पायहै ॥७॥

प्रकरण—प्रेमिका की उक्ति। पत्र या संदेश प्रिय को दिया गया है। उनकी उदासीनता या विमुखता का और अपनी सुमुखता का कथन है। दूसरे को दुख देनेवाला दुख पाता है यह चेतावनी भी दी गई है।

चूर्णिका—निठुर = निष्ठुर, निर्दय। मिटाय० = पहचान ही मिटा दी, एकदम भुला दिया। जक = रट। निपट = अत्यंत। सूल० = वेदना की कसक, पीड़ा की अनुभूति। क्योंहूं = किसी प्रकार से भी। न भुलाय = भूलती ही नहीं। धौं = तो। कै = कि, या। प्रगट = प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्रत्यक्ष। जू = एजी। कलपायहै = तरसाएगा, कष्ट देगा। सु = सो, वह। कल = सुख, चैन।

तिलक—हे प्रिय, आप निठुर ही नहीं अतिनिठुर हो गए। मुझे ही

भूलना क्या, मेरी पहचान को भी मिटा दिया (जो भूल जाता है उसका स्मरण फिर कभी हो सकता है, पर जिसकी पहचान की रेखाएँ भी मिटा दी गईं वह फिर कैसे ध्यान में आ सकता है)। इस दुख से मुझे हाय-हाय की रट लगी है। एक तो यह दुख कि जिससे प्रेम किया उसने मेरी पहचान तक को नष्ट कर डाला। दूसरे दुख यह कि हृदय ऐसा बुरा है जो किसी प्रकार वेदना का परित्याग नहीं करता। आप तो अत्यंत निर्दय हैं, आपको सुध ही भूल गई। स्मृति की वृत्ति ही आपमें नहीं रही। जिसमें स्मृति होती है वह तो समय पर घटित घटना का स्मरण कर भी सकता है, पर आपमें स्मृति ही नहीं रही। पहले भूली हुई स्मृति आए, फिर स्मृति में भूली हुई मैं आऊँ, यह असंभव हो गया। इधर मेरी स्थिति यह है कि आपके विरह की वेदना से जो कसक होती है वह किसी प्रकार भी भूलती नहीं, हटती नहीं। यदि उस वेदना को भूलने का यत्न भी करती हूँ तो भी वह दूर हटती नहीं, निरंतर उसकी ओर वृत्ति रहती है (इससे पीड़ा का नैरंतर्य व्यक्त किया गया)। पहले तो तब (-संयोगावस्था में , मीठी-मीठी बातें करके मुझे ठगा। पर अब (वियोग में) मेरा जी क्यों जलाते हैं (ठग जिसे ठगता है उसे तभी तक कष्ट देता है जब तक उसकी कार्यसिद्धि नहीं हो जाती)। पर आप कार्यसिद्धि के अनंतर भी मुझे अब भी जला रहे हैं। यह कौन-सा न्याय (ठग के न्याय से भी तो यह नहीं मिलता) है। आपने यह प्रख्यात कहावत सुनी है या नहीं कि जो किसी को कलपाता है उसे भी कल नहीं मिलती। दूसरे को कष्ट देनेवाला कैसे सुख पाएगा।

व्याख्या—अति निठुर = निठुर किसी की पहचान नहीं मिटाता, भले ही वह उसे पहचानने में आनाकानी करे। मिटाय = किसी की पहचान समय पाकर आप-से-आप क्षीण हो जाती है, पर आपने जान-बूझकर प्रयत्न करके पहचान को मिटा दिया। हक = हाय-हाय की रट का हेतु यह कि यदि पहचान की रेखा मिटाई न जाती तो कभी उस पहचान से प्रेरित होकर मेरी ओर उन्मुख होने की संभावना होती, पर अब तो पहचान के साथ उसकी संभावना भी समाप्त हो गई। रेखाएँ मिटाई गईं पहचान की, पर उनके मिटाने से वेदना हाय-हाय के रूप में प्रेमिका को हुई, उसकी अनुभूति की कोमलता इसमें व्यंजित होती है। किसी का चित्र मिटा देने से उसे शारीरिक वेदना नहीं होती, मानसिक हो सकती

है। किसी को मानसिक पीड़ा अधिक होती है किसी को कम। इसे अधिक हैं रट लगी है। रगड़ी गई पहचान और रगड़ गया प्रेमिका का हृदय। पहचान मिटी और जक लगी। पहचान ही मिटकर जक बन गई है। निपट निरदई = निष्ठुर और निर्दय में भेद है। जो निष्ठुर होता है वह अनुभूतिशून्य होता है, किसी के प्रेम की अनुभूति उसमें नहीं होती। निर्दय में किसी की वेदना की अनुभूति नहीं होती, साथ ही वह किसी के प्रति आघात आदि का कड़ा व्यवहार भी करता है। कोई पुत्र अपने माता-पिता की चिंता न करे तो वह निठुर कहलाएगा। वह उनकी संपत्ति छीनने का भी यत्न करे, उन्हें भूखों मरने को विवश करे तो निर्दय होगा। निष्ठुर किसी की उपेक्षा करने से, उदासीनता रखने से होता है निर्दय उसे कष्ट भी पहुँचाने से। पहले 'निठुर' फिर 'निर्दय' कहने में उत्तरोत्तर उत्कर्ष है। अति और निपट में भी अंतर है। किसी सीमा को पार कर जाने से 'अति' होती है। ऐसी सीमा पार करनेवाले जगत् में संख्या के विचार से अधिक हो सकते हैं। निपट उसे कहते हैं जिसकी समता का दूसरा न हो, जो अपनी विशेषता में अद्वितीय हो। इस प्रकार इन दोनों पदों में भी अर्थ के विचार से उत्कर्ष है। निठुर प्रिय ने पहचान मिटा दी, सामान्यतया जैसा कोई नहीं करता वैसा आचरण किया। पर निर्दय प्रिय ने तो मानवता का ही परित्याग कर दिया। प्रेमिका समझती है कि वेदना की अनुभूति जैसे मैं कर रही हूँ वैसे प्रिय भी करता होगा। पर उसने तो वेदना की अनुभूति ही त्याग दी और उसी के नेत्र-भालों (सेल) से जो पीड़ा मुझे हो रही है वह भूलती नहीं। सेलनि = चुभन को कहते हैं, बाण, भाले आदि नुकीले अस्त्र-शस्त्र के चुभने से होनेवाली पीड़ा। कोई नुकीला हथियार जब तक शरीर में वैसा रहता है तब तक अधिक पीड़ा होती है, फिर वह धीरे-धीरे कम हो जाती है। पीड़ा यहाँ ऐसी चुभी है कि निकलती नहीं है, कष्ट की अनुभूति कैसे कम हो सकती है। भुलाय = भुलाति के अर्थ में है। भुलाति के 'त' के लोप से भुलाइ फिर भुलाय। मीठे = ठग वाणी तो मीठी बोलते ही हैं, मीठी वस्तु खिलाते या झुलाते भी हैं। बिहारी ने 'गुरुरी' पद का व्यवहार किया है। जिय = जी, जीवन। जीवन के जलाने में विरोध भी। न्याय = उचित बात। ठगों का भी न्याय होता है, वे उचित-अनुचित का विचार करते हैं। दूसरे यह कि वे भी पकड़े जाते हैं, उन्हें शासन से दंड मिलता है। यदि किसी

को शासन के दंड का भय न हो तो ईश्वर का तो भय होना ही चाहिए। ईश्वर के द्वारा दंड मिलने का भय कहावत से बतलाया गया है। ऐसा हो सकता है कि आप भी किसी के द्वारा ठगे जायें। जैसे को तैसा मिल जाय। प्रगट = प्रख्यात और प्रत्यक्ष से यह भी व्यक्त होता है कि इस कहावत के अनुरूप स्थिति निरंतर आती रहती है। तभी वह बहुत चलती है प्रगट है, सभी जानते हैं। आपको मुझे कष्ट देने का बदला शीघ्र मिल सकता है। सुनी है कै नाहीं = आपने सुना होता तो कदाचित् ऐसा न करते। सुना हो तो कदाचित् इसपर ध्यान न दे रहे हों। सुनी अनसुनी करते हों। मेरी सुनी अनसुनी करते रहते हैं इसलिए लोककथन की भी सुनी अनसुनी करना संभव है।

अलंकार—'कलपायहैं' की आवृत्ति और अर्थभेद से यमक। छेकोक्ति (लोकोक्ति का साभिप्राय प्रयोग करने से)।

निरुक्ति—'जू' शब्द 'जीव' से व्युत्पन्न है। तुलसीदास ने 'कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए' में जिस 'जीव' शब्द का प्रयोग किया है उसीसे खड़ी का 'जी' और ब्रजी का 'जू' दोनो बने। 'जय जीव' का अर्थ है (आपकी) जय हो, (आप) जिएँ।